Received: Mar '24
Revised:
Accepted: Apr '24

© 2024 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

ANALYSIS OF POPULATION GROWTH AND MIGRATION IN RAJASTHAN
राजस्थान में जनसंख्या वृद्धि और उत्प्रवास का विश्लेषण

Chanchal Verma[1] and Dr. Vipin Saini[2]
[1]Research Scholar, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner (Rajasthan)
[2]Professor, Government Dungar College, Bikaner (Rajasthan)

ABSTRACT

In the present time, continuous population growth is ongoing worldwide, whereas in developed countries, unprecedented population growth has occurred. The main objective of this study is to analyze the trends and major reasons for population growth and migration in the study area. Secondary census data has been used in this study. It primarily uses census data from 1901 to 2011 for population growth and mainly the 2011 census data for migration studies. The study has analyzed that while there has been continuous population growth in the state, the rate of population growth has decreased with changing times. Additionally, the migration study found that 2.20 crore people migrated from the state, primarily due to (i) marriage (by women) and (ii) economic reasons (by men). Furthermore, a comparative study of migration from border states in the study area has also been conducted.

Keywords: Population Growth, Population growth rate, Emigration (out-migration), Inter-state migration

प्रस्तावना

जनसँख्या वृद्धि किसी क्षेत्र की जनसांख्यिकी गतिशीलता का केंद्र है। यह जनसँख्या का वह तत्व है जिससे जनसँख्या के अन्य सभी तत्त्व गहन रूप से सम्बद्ध है। किसी निश्चित अवधि के दौरान किसी देश या भौगौलिक क्षेत्र के लिए जनसँख्या के आकर में परिवर्तन की वार्षिक औसत दर ही 'जनसँख्या वृद्धि' कहलाती है। यह जनसँख्या के आकार में वार्षिक वृद्धिऔर उस वर्ष की कुल जनसँख्या के बीच के अनुपात को व्यक्त करता है, जिसे 100 से गुणा कर प्रतिशत (%) में व्यक्त किया जाता है।

1950 में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के पांच साल बाद दुनिया की आबादी लगभग 260 करोड़ तक थी, जो 1987 में 500 करोड़ तथा 1999 में 600 करोड़ तक पहुँच गयी। वर्ष 2011 में वैश्विक जनसँख्या 700 करोड़ होने का अनुमान लगाया गया था। इस मील के पत्थर को चिन्हित करने के लिए वैश्विक आन्दोलन '7 बिलियन एक्शन' शुरू किया गया था। अगले 30 वर्षो में दुनिया की आबादी में 2 अरब लोगो की वृद्धि होने की उम्मीद है, जो वर्तमान में 7.7 अरब से 2050 में 9.7 अरब और 2100 के आस-पास लगभग 11 अरब हो सकती है। चीन (144 करोड़) तथा भारत (139 करोड़) दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश है। वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर प्रजनन दर, उच्च जीवन प्रत्याशा व अन्तराष्ट्रीय प्रवास को मुख्य कारण माना जा सकता है।

मानव प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अपनी मूलभूत व उच्च आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए एक स्थान से दुसरे स्थान पर प्रवास करता आया है। प्रवास जनसँख्या वितरण के तीन प्रमुख घटकों- (i) जनसँख्या (ii) मृत्यता (iii) प्रवास में से एक है।
साधारण शब्दों में भौतिक व मानवीय कारणों से एक निवासित क्षेत्र में मनुष्यों का स्थान परिवर्तन 'प्रवास' कहलाता है, जिसमें गत्यात्मकता, नवीन स्थल की चाह व गृहत्याग की भावना अन्तर्निहित पक्ष होते हैं। वैश्विक प्रवास रिपोर्ट 2022 के अनुसार विश्व में 2020 में 281 मिलियन लोगों द्वारा अंतराष्ट्रीय प्रवसन हुआ, जो कुल वैश्विक जनसँख्या का 3.6% है। वहीं द्वारा अंतराष्ट्रीय स्तर पर 702 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रेषण किया गया।

अध्ययन क्षेत्र

भारतीय राज्य राजस्थान का इतिहास 5,000 वर्ष पुराना है। प्राचीन काल में लगभग 700 ई. से राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में राजपूत वंशो का उदय हुआ और उन्होंने अपना प्रभुत्व कायम किया। इससे पहले राजस्थान कई गणराज्यों का हिस्सा था। 1000-1200 ई. के बीच राजस्थान चालुक्यों, परमारों और चौहानों के बीच वर्चस्व के लिए संघर्ष का गवाह बना। 1201 से 1707 तक यँहा मुग़ल सत्ता का प्रभाव रहा, जिसका 1707 के पश्चात ह्रास होने लगा। तत्पश्चात राज्य मराठा व पिंडारियो के आक्रमण झेलते हुए ब्रिटिश सत्ता की अधीनता स्वीकार की और विभिन्न एकीकरणों के चरणों से गुजरते हुए अन्तत: 1 नवम्बर 1956 को वर्तमान राजस्थान राज्य का स्वरुप अस्तित्व में आया।

राजस्थान राज्य क्षेत्रफलनुसार भारत का सबसे बड़ा राज्य है जो भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में स्थित है। इसका कुल भौगौलिक क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीर (1,32,139 miles) है। प्रदेश का अक्षांशीय विस्तार 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार 69°30' से 78°17' पूर्वी देशांतर तक है। इसके उत्तर में पंजाब व हरियाणा राज्य, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में मध्यप्रदेश तथा दक्षिण-पश्चिम में गुजरात स्थित है। इसके साथ ही राज्य पश्चिम पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करता है।

2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल जनसँख्या 68,54,8437 है, जिसमें 35,55,0997 पुरुष व

32,99,7440 महिलाएं है। प्रदेश में दशकीय वृद्धि दर 21.3% है। यंहा कुल जनसँख्या का 75.1% भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवासित है वहीं 24.9% भाग शहरी क्षेत्रों में निवासित है। प्रदेश में लिंगानुपात की स्थिति अधिक अच्छी नहीं है प्रति हज़ार पुरुषों पर 888 महिलाएं हैं। राज्य में साक्षरता 66.1% है जिसमें पुरुष साक्षरता 79.2% तथा महिला साक्षरता 64.6% है। राष्ट्रीय साक्षरता औसत (74.04%) से तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि राज्य में औसत साक्षरता व महिला साक्षरता की अत्यन्त पिछड़ी स्थिति है जिसे जनसँख्या वृद्धि के प्रमुख कारण के रूप में भी देखा जा सकता है।

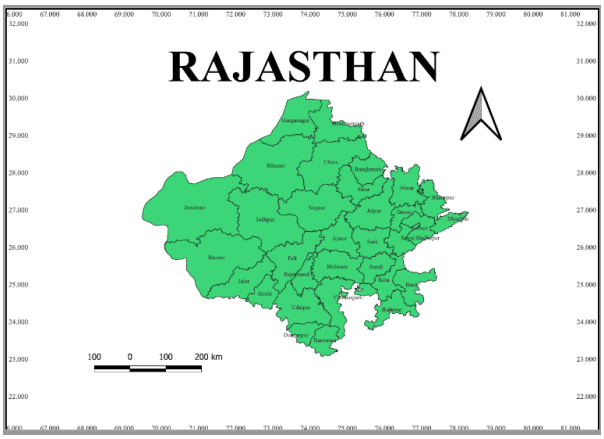

Census of India 2011

उद्देश्य

1. जनसँख्या वृद्धि का तुलनात्मक गणना कर उत्तरदायी कारकों का अध्ययन करना।
2. बहिर्प्रवास का आकार, आयु, लिंग आदि आधार पर अध्ययन करना।
3. बहिर्प्रवास के उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण करना।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ो पर आधारित है। इसके लिए 2011 की जनगणना, विभिन्न प्रकाशित स्रोत, लेखों, समाचार पत्रों से डाटा एकत्र किये गए हैं। जनसँख्या वृधि को दर्शाने के लिए 1951 से 2011 तक की जनगणना के आँकड़ो का तुलनात्मक अध्ययन किया है, वहीं दूसरी ओर प्रदेश में बहिर्प्रवास का विश्लेषण करने हेतु जनगणना 2011 की डी/D- 2,..... श्रेणी की तालिकाओं का प्रयोग किया गया है। इन आँकड़ो को विभिन्न ग्राफ व टेबल के माध्यम से प्रदर्शित किया है।

जनसँख्या वृद्धि: कारण और विश्लेषण

2001 में जँहा 1028737436 की तुलना में 2011 में जनसँख्या 1210193422 है। निरपेक्ष रूप से 2001-2011 के दशक के दौरान भारत की जनसँख्या में 181 मिलियन से अधिक की वृधि हुई है।

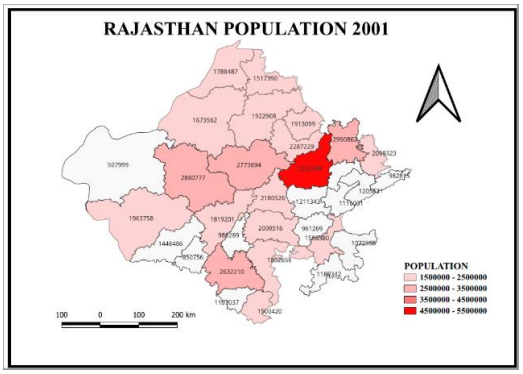

2001 Census

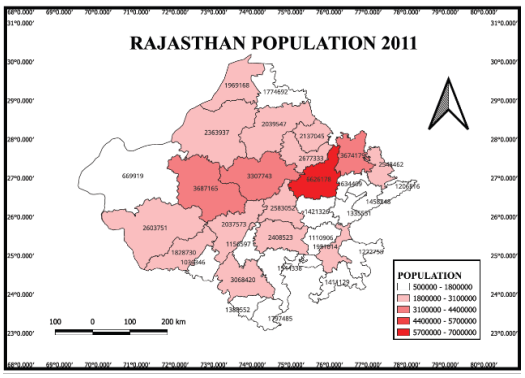

2011 Census

चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के अनुसार जनसँख्या वृद्धि का कारण राज्य की विशेष भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रष्ठभूमि है। यंहा महिला साक्षरता 64.6% ही है तथा सामाजिक चेतना भी शोचनीय स्तर पर है। महिलाएं आज भी संस्थागत प्रसव की अपेक्षा दाई द्वारा प्रसव कराने पर ही अधिक बल देती है। बच्चो के स्वस्थ व जीवित रहने की कम सम्भावना से अधिक बच्चों का जन्म, कम आयु में विवाह तथा पुत्र प्राप्ति की लालसा के कारण प्रदेश में जन्मदर तथा शिशु मृत्युदर अधिक रही है।

राज्य में जनसँख्या वृद्धि हेतु अग्रलिखित कारणों को उतरदायी माना जा सकता है-

1) स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार
2) बाल विवाह
3) धार्मिक अन्धविश्वास
4) अशिक्षा
5) जीवन प्रत्याशा

(i) स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार-

राज्य में निरंतर स्वास्थ्य सुविधाओ में सुधार होने के कारण राज्य के जन्मदर व मृत्युदर में काफी अंतर आ गया है, वहीं दूसरी ओर उचित व वहनीय स्वास्थ्य सुविधाओ के कारण मृत्युदर में भारी गिरावट आई है जो जनसँख्या वृद्धि का प्रमुख कारण रहा है।

(ii) बाल विवाह-

राज्य में बाल विवाह एक मुख्य सामाजिक कुरीति है महिलाओ की बहुत ही छोटी उम्र में विवाह कर दिए जाने के कारण संतानोत्पत्ति योग्य आयु का पूर्ण रूप से उपयोग कर लिया जाता है। परिणामत: बहुत ही कम उम्र में बच्चे पैदा हो जाने के कारण जनसँख्या में वृद्धि होती है।

(iii) धार्मिक अंधविश्वास –

संतानप्राप्ति को ईश्वरीय देंन मानकर निरोधक उपायों को ना अपनाना जनसँख्या वृद्धि का प्रमुख कारण है, इसके अलावा धार्मिक शास्त्रों में पुत्र द्वारा सद्गति एवं मुक्ति की अवधारणा से उत्पन्न पुत्र प्राप्ति के मोह ने जनसँख्या वृद्धि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(iv) अशिक्षा-

अशिक्षा के कारण समाज धार्मिक आडम्बरो एवं विभिन्न कुरीतियों से घिरा रहता है और समाज में रूढीवाद व अतार्किक प्रवृति हावी रहती है। स्वास्थ्य सुविधाओ एवं परिवार नियोजन की उपायों की उपयुक्त जानकारी का अभाव रहता है, परिणामत: जनसँख्या में तीव्र वृद्धि होती है।

(v) जीवन प्रत्याशा-

म्रत्युदर में कमी होने से जीवन प्रत्याशा में भी वृद्धि होती है। जन्मदर व मृत्युदर दो ऐसे कारक है जो जीवन प्रत्याशा को प्रभावित करते है। राज्य में जीवन प्रत्याशा 2002-06 में 62 वर्ष, 2010-14 में 67.7 वर्ष रही जो 2014-18 में 68.7 वर्ष पर पहुँच गई। यह आंकड़ा राज्य में बढती जीवन प्रत्याशा को दर्शाता है ।

YEAR	POPULATION	GROWTH	
		NET CHANGE	RATE (%)
2011	68,548,437	12,041,249	21.31
2001	56,507,188	12,501,198	28.41
1991	44,005,990	9,744,128	28.44
1981	34,261,862	8,496,056	32.97
1971	25,765,806	5,610,204	27.83
1961	20,155,602	4,184,828	26.20
1951	15,970,774	2,106,915	15.20
1941	13,863,859	2,115,885	18.01
1931	11,747,974	1,455,326	14.14
1921	10,292,648	-690,861	-6.29
1911	10,983,509	689,419	6.70
1901	10,294,090	-	-

Rajasthan Population (1901-2011)

राज्य की जनसँख्या के इतिहास पर यदि दृष्टि डाली जाए तो पाएंगे कि वर्ष 1901 में राज्य की जनसँख्या 1 करोड़ थी जो 1951 में बढ़कर 1 करोड़ 60 लाख हो गई । 1951- 1961 के दशक में प्रतिवर्ष 4 लाख की बढ़ोतरी हुई तथा 1961- 1971 में प्रतिवर्ष 5.6 लाख की। इसी प्रकार 1971- 81 में प्रतिवर्ष 8.6 लाख तथा 1981-91 में प्रतिवर्ष 10 लाख व्यक्ति राज्य की जनसँख्या में जुड़े हैं। इस तरह से 1991 में राज्य की जनसँख्या 440.06 लाख हो गई जो 2001’ में 565.07 लाख तथा 2011 में 685.48 लाख तक पहुँच गई।

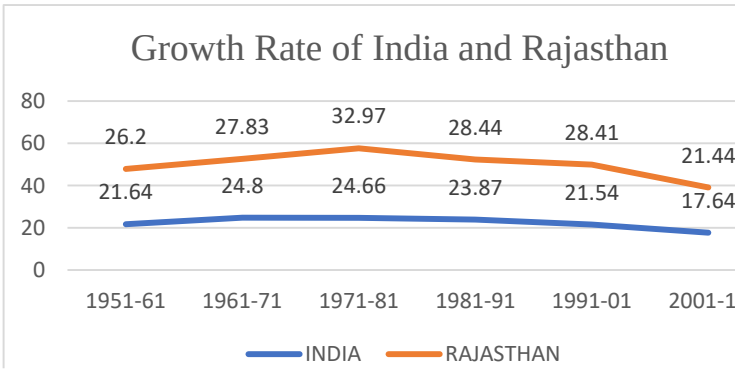

Growth rate of India and Rajasthan

उपर्युक्त ग्राफ के आधार पर प्रदर्शित होता है कि राज्य की जनसँख्या वृद्धि दर 1951-1961 में 26.20%, 1961-71 में 27.83%, 1971-81 में 32.97%, 1981-91 में 28.44%, 1991-2001 में 28.41% तथा 2001-2011 में 21.31% रही।

तालिका का सिंहावलोकन करने से ज्ञात होता है की राज्य में जनसँख्या वृद्धि दर सतत रूप से जारी रूप में बढ़ रही है परंतु जनसँख्या वृद्धि दर पहले सतत रूप में बढ़ी है यथा 1951-61 , 1961-71 , 1971-81 तक क्रमशः 11% , 1.63% , 5.14% की वृद्धि हुई,

परन्तु 1981 के पश्चात जनसँख्या वृद्धि दर में लगातार कमी देखने को मिली है।

उत्प्रवास कारण और विश्लेषण

1980 के दशक में आशीष बोस द्वारा लिखित एक लेख में बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश सहित राजस्थान को भी बीमारू राज्य का दर्जा मिला। बीमारू राज्य देश के ऐसे क्षेत्र को इंगित करते है जंहा प्रतिव्यक्ति आय बहुत कम, न्यूनतम साक्षरता दर तथा कुपोषण दर अधिक पाई जाती है। साथ ही ऐसे राज्य दक्षिण के राज्यों से सामाजिक-आर्थिक विकास के मामले में बहुत पीछे है और जनसँख्या विस्फोट में बहुत अधिक योगदान दे रहे है। ऐसी स्थिति में राज्य में पर्याप्त रोजगार साधनों के उपलभ्ध ना होने के कारण बड़ी संख्या में राज्य से बहिर्प्रवास हुआ है। श्रमिक वर्ग ने औद्योगीक व अन्य क्षेत्रों में रोजगार प्राप्ति हेतु प्रवास किया, वहीं व्यवसायी वर्ग व उच्च कुशल प्रशिक्षित लोगों ने भी अपनी उच्च आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु अपनी सुविधानुसार समीपस्थ व दूरस्थ स्थानों पर बहिर्प्रवास किया। उच्च शिक्षा प्राप्ति भी बहिर्प्रवास का एक प्रमुख कारण रही है क्योकि राज्य में साक्षरता की स्थिति बहुत ही कमजोर रही है । समीपस्थ राज्यों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने के कारण महिलाओं का बड़ी मात्रा में बहिर्प्रवास हुआ है। भौतिक सुख सुविधाओ की पर्याप्त उपलब्धता, शिक्षा के बेहतरीन अवसर, बढती क्रय शक्ति आदि आकर्षक कारकों ने श्रमिक व व्यवसायी वर्ग को परिवार सहित प्रवास की प्रेरणा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रवास के कारण

राज्य में प्रवास के प्रमुख कारणों में निम्न बिन्दुओ को शामिल कर सकते हैं (i)रोजगार (ii) व्यवसाय (iii) शिक्षा (iv) विवाह (v) जन्म के बाद प्रवास (vi) परिवार सहित प्रवास (vii) अन्य

Reasons	Persons	Male	Female
Works & Employment	1709602	1445847	263755
Buisness	75006	46717	28289
Education	162998	105260	57738
Marriage	14089571	132288	13957283
Moved after birth	976558	580440	396118
Moved with household	2647776	1135712	1512064
other	2409971	116658	1253313

रोजगार के लिए कुल 17.09 लाख लोगों ने प्रवास किया जिसमें 14.45 लाख पुरुष तथा 2.63 लाख महिलाएं थी वहीं व्यापार हेतु कुल प्रवासित 75006 लोगों में 46717 पुरुष तथा 28289 महिलाएँ थी। विवाह के लिए कुल 1.40 करोड़ लोगों ने प्रवास किया जिसमें 1.32 लाख पुरुष व 1.39 करोड़ महिलाएं थी। जन्म के बाद प्रवासित लोगों की संख्या 9.76 लाख थी जिसमें 5.80 लाख पुरुष व 3.96 लाख महिलाएँ शामिल थी वहीं परिवार सहित 26.47 लाख लोगों ने प्रवास किया जिसमें 11.35 लाख पुरुष तथा 15.12 लाख महिलाएँ शामिल थी। इसके अलावा अन्य कारणों से प्रवासित लोगों की संख्या 24.09 लाख थी जिसमें 11.56 लाख पुरुष व 12.53 लाख महिलाएं थी।

Duration	Total	Male	Female	Rural	Urban
Total	22071482	4602922	17468560	15836322	6235160
Less than one year	968571	382963	585608	702662	265903
1-4 Year	3198514	737348	2461166	2198544	999970
5-9 Year	3052441	647377	2405064	2108415	944026
10-19 Year	4937576	926225	4011351	3516836	1420740
20 + Year	8219206	1122192	7097174	6370408	1848798
Duration not stated	1695174	786817	908357	939457	755717

राजस्थान राज्य में 2011 की जनगणना के अनुसार कुल प्रवासियों की संख्या 2.20 करोड़ है जिसमें 46.02 लाख पुरुष तथा 1.74 करोड़ महिलाएँ हैं। कुल प्रवासियों में 1.58 करोड़ प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों से तथा 62.35 लाख प्रवासी शहरी क्षेत्रों से सम्बधित है। एक वर्ष से भी कम समयावधि के लिए 9.68 लाख व्यक्तियों ने प्रवास किया है, जिसमें 3.82 लाख पुरुष तथा 5.85 लाख महिलाएँ है। इस वर्ग में 7.02 लाख प्रवासी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 2.65 लाख शहरी क्षेत्रों से सम्बंधित है । 1 से 4 वर्ष की समयावधि हेतु प्रवासियों की संख्या 3.98 लाख है जिसमें 7.37 लाख पुरुष तथा 2.46 लाख महिलाएं है। इसमें 21.98 लाख प्रवासी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 9.99 लाख प्रवासी शहरी क्षेत्र से सम्बंधित है। 5-9 वर्ष तक की समयावधि हेतु प्रवासित संख्या 30.52 लाख है जिसमें 6.47 लाख पुरुष तथा 24.05 लाख महिलाएँ है। इसके साथ ही 21.08 लाख प्रवासी ग्रामीण तथा 9.44 लाख प्रवासी शहरी परिवेश से सम्बन्ध रखते हैं। 10-19 वर्ष की समयावधि हेतु प्रवासियों की संख्या 49.37 लाख जिसमें 9.26 लाख पुरुष तथा 40.11 लाख महिलाएँ शामिल हैं। इनमे 35.16 लाख व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्र से तथा 14.20 लाख व्यक्ति शहरी क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं। 20 से अधिक वर्ष की समयावधि तक प्रवासित लोगो की संख्या 82.19 लाख है जिसमें 11.22 लाख पुरुष तथा 70.97 लाख महिलाएँ है साथ ही 63.70 लाख व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्र से व 18.48 लाख व्यक्ति शहरी क्षेत्रों से सम्बंधित हैं

व वहीं दूसरी ओर अन्य वर्ग, जिसमें समयावधि नही बताई गई, में कुल 16.95 लाख प्रवासी है जिसमें 7.86 लाख पुरुष तथा 9.08 लाख महिलाएँ शामिल हैं। साथ ही 9.39 लाख प्रवासी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 7.55 लाख प्रवासी शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित है।

निष्कर्ष

राजस्थान के सीमावर्ती राज्यों में प्रवास का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि 5.64 करोड़ लोगों द्वारा सर्वाधिक उत्प्रवास उत्तरप्रदेश से हुआ है इसके पश्चात क्रमशः 2.68 करोड़ प्रवासी गुजरात से, 2.47 करोड़ मध्यप्रदेश से, 2.20 करोड़ राजस्थान से, 1.37 करोड़ पंजाब से तथा 1,05 करोड़ उत्प्रवासी हरियाणा राज्य से सम्बंधित है। इस प्रकार राज्य अपने सीमावर्ती राज्यों से उत्प्रवास में चतुर्थ स्थान पर है।

यद्यपि वर्तमान में राज्य में अप्रवास की मात्रा में वृद्धि हुई है। आँकड़ो से पता चलता है कि 2/3 अप्रवासी उत्तरप्रदेश (6.15 लाख), मध्यप्रदेश (5.63 लाख) तथा हरियाणा (5.43 लाख) से है।

उपर्युक्त अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है की राज्य में बहिर्प्रवास का सबसे प्रमुख कारण विवाह रहा है, इसमें महिलाओं का % सबसे अधिक रहा है। इसके अलावा रोजगार प्राप्ति हेतु किये गए प्रवास में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों का प्रतिशत अधिक रहा। दूसरी ओर राज्य में समयावधि के आधार पर प्रवास के अध्ययन से पता चला कि कुल 2.20 करोड़ प्रवासियों में महिलाओं का प्रतिशत अधिक रहा। इसके अलावा अधिकांश प्रवासी ग्रामीण पृष्ठभूमि से सम्बन्धित थे जो रोजगार, शिक्षा, व्यवसाय आदि उत्तरदायी कारणों से प्रभावित होकर प्रवासित हुए।

REFERENCES

Chandna, R. C. (2017). *A GEOGRAPHY OF POPULATION.* Ludhiyana: Kalyani Publisher.

Demographic and socio-econmoic statistics. (n.d.). World Health Organisation. Retrieved June 2022, 17, from https://www.who.int/data/gho/indicator-metadata-registry/imr-details/1120

Gosal, G. S. (1961). Internal Migration in India-A Regional Analysis. *36*, 106.

Khan, S. (2019, July 23). Outgoing migration beats incoming: Census report. *THE TIMES OF INDIA*. Retrieved from Outgoing migration beats incoming: Census report: https://timesofindia.indiatimes.com/city/jaipur/outgoing-migration-beats-incoming-census-report/articleshow/70337273.cms#aoh=16540089588481&amp_ct=1654008960317&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com&amp_tf=From%20%251%24s

McAuliffe, M., & Triandafyllidou, A. (2021). *WORLD MIGRATION REPORT 2022.* Geneva: International Organisation for Migration.

Office of the Registrar General & Census Commissioner. (n.d.). India Ministry of Government Affairs, Government of India. Retrieved from https://censusindia.gov.in/census.website/

Peace, dignity and equality on a healthy planet . (n.d.). United Nations. Retrieved June 15, 2022, from https://www.un.org/en/global-issues/population

Rajasthan History. (n.d.). Government of Rajasthan Official Web Portal. Retrieved June 17, 2022, from Government of Rajasthan: https://rajasthan.gov.in/RajasthanHistory.aspx?menu_id=41

Trewartha, G. T. (1969). *A Geography of Population : World Patterns.* New York: John Wiley and Sons.